



अमीर खुसरो: जीवन, साहित्य और भारतीय संस्कृति पर प्रभाव

1 रेनु

शोधार्थी, इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा, हरियाणा

Email ID- renuphogat146@gmail.com

2 डॉक्टर नीलम रानी

सहायक प्रोफेसर, इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा, हरियाणा

सारांश:

यह शोध पत्र अमीर खुसरो (1253-1325) के जीवन, साहित्यिक और सांस्कृतिक योगदान का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है। अमीर खुसरो, एक महान सूफी कवि, संगीतज्ञ और विचारक के रूप में जाने जाते हैं, जिन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप के साहित्य, संगीत और भाषा को एक नई दिशा दी। उन्होंने फारसी, हिंदी और उर्दू में कविताओं की रचना की और उनकी रचनाओं में प्रेम, भक्ति, सूफीवाद और आध्यात्मिकता के गहरे तत्व विद्यमान हैं। उनके साहित्यिक कार्यों ने हिंदी और उर्दू भाषाओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे उन्होंने भाषा और साहित्य के क्षेत्र में एक नई धारा का सूत्रपात किया। संगीत के क्षेत्र में भी उनका योगदान अमूल्य है। उन्हें भारतीय शास्त्रीय संगीत में तबला और सितार के आविष्कारक के रूप में जाना जाता है। साथ ही, कव्वाली और तराना जैसी शैलियों के विकास का श्रेय भी खुसरो को जाता है, जो आज भारतीय संगीत का अभिन्न हिस्सा हैं। खुसरो की रचनाएँ भारतीय और फारसी सांस्कृतिक धरोहरों का सम्मिश्रण हैं, जो उस समय के समाज में सांस्कृतिक समन्वय और एकता को बढ़ावा देती थीं। इस शोध पत्र में अमीर खुसरो के साहित्यिक कार्यों, संगीत में उनके योगदान, और भारतीय संस्कृति पर उनके प्रभाव का गहन विश्लेषण किया गया है। उनके द्वारा स्थापित सांस्कृतिक और साहित्यिक परंपराएँ आज भी भारतीय समाज में प्रासंगिक हैं, और उनकी रचनाएँ आज भी साहित्य और संगीत के क्षेत्र में प्रेरणास्रोत बनी हुई हैं। अमीर खुसरो का व्यक्तित्व और योगदान भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में अमूल्य स्थान रखते हैं।

मूल शब्द

अमीर खुसरो, भारतीय संगीत, इतिहास, योगदान, हिंदी, फारसी, उर्दू, हिंदुस्तान, गुलाम, खिलजी, तुगलक, अफगान।

प्रस्तावना

अमीर खुसरो (1253-1325) भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे प्रसिद्ध सूफी कवि, संगीतज्ञ और विद्वान थे। वे तुर्क और भारतीय संस्कृति के मिश्रण का प्रतीक माने जाते हैं। उनका असली नाम अबुल हसन यमीनुद्दीन खुसरो था, लेकिन उन्हें "अमीर खुसरो" के नाम से ख्याति मिली। खुसरो ने फारसी, हिंदी और प्रारंभिक उर्दू भाषाओं में रचनाएँ कीं, जिससे उन्होंने इन भाषाओं के विकास में अहम भूमिका निभाई। संगीत में उनका योगदान भी अद्वितीय है; उन्हें तबला और सितार जैसे वाद्य यंत्रों के विकास

का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने कव्वाली और तराना जैसी संगीत शैलियों का विकास किया, जो आज भी भारतीय शास्त्रीय संगीत का अभिन्न हिस्सा हैं। अमीर खुसरो, जो हिंदुस्तान में साम्प्रदायिक सद्भावना को बढ़ाने वाले एक महान कवि थे, उन्होंने भारत में गुलाम, खिलजी, तुगलक और अफगान शासकों के राजकाल को अपनी आंखों से देखा। वे 11 सुल्तानों के शासनकाल के दौरान जीवित थे और कई सुल्तानों के दरबार में भी काम किया। अमीर खुसरो को आज के कासगंज (पहले एटा जिले) के पहले हास्य और श्रृंगार कवि के रूप में भी जाना जाता है। उनके समय में, दिल्ली सल्तनत एक प्रमुख शक्ति थी, और खुसरो ने उस समय की महत्वपूर्ण घटनाओं को अपने लेखन में दर्शाया।¹

खुसरो को उनके गुरु, सूफी संत हजरत निजामुद्दीन औलिया के प्रति अटूट भक्ति और समर्पण के लिए भी जाना जाता है। उनकी रचनाओं में सूफीवाद की गहरी झलक मिलती है, जो प्रेम, भक्ति और आध्यात्मिकता के प्रति उनकी समझ को प्रकट करती है। उनकी कविताओं और संगीत ने भारतीय संस्कृति और समाज पर गहरा प्रभाव डाला है, और उन्हें भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का अमूल्य हिस्सा माना जाता है। उनकी कृति "खजाइन-उल-फुतूह" अलाउद्दीन खिलजी के समय की महत्वपूर्ण राजनीतिक और सैन्य घटनाओं का वर्णन करती है।²

अमीर खुसरो का जीवन

अमीर खुसरो का जन्म 1253 ईस्वी में उत्तर प्रदेश के एटा जिले के पटियाली नामक स्थान पर हुआ था। उनका पूरा नाम अबुल हसन यमीनुद्दीन खुसरो था। उनके पिता सैफुद्दीन महमूद एक तुर्की अधिकारी थे, जबकि उनकी माता दौलत नाज़ एक भारतीय हिंदू परिवार से थीं। इस मिश्रित पृष्ठभूमि ने खुसरो के व्यक्तित्व और उनके साहित्य में विभिन्न सांस्कृतिक प्रभावों का संचार किया। भारत में फारसी के एक महान और लोकप्रिय कवि होने के कारण अमीर खुसरो को "तूती-ए-हिंद" (हिंदुस्तान का तोता) कहा जाता था। उन्हें सुल्तान और तुर्क जैसे उपनामों से भी जाना जाता था। उनके आध्यात्मिक गुरु हजरत निजामुद्दीन औलिया उन्हें "तुर्क" कहकर बुलाया करते थे। उनके जन्मस्थान के बारे में प्रसिद्ध लेखक भोलेनाथ तिवारी ने अपनी पुस्तक "अमीर खुसरो और उनका साहित्य" में लिखा है कि उनका जन्म दिल्ली में हुआ था, इसी कारण से उन्हें "खुसरो देहलवी" भी कहा जाता था। खुसरो का शुरुआती जीवन दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों के दरबार में बीता, जहां उन्होंने अलाउद्दीन खिलजी और गयासुद्दीन तुगलक जैसे सुल्तानों के शासनकाल में अपनी सेवाएं दीं। उनके समय में, दिल्ली सल्तनत एक प्रमुख शक्ति थी, और खुसरो ने उस समय की महत्वपूर्ण घटनाओं को अपने लेखन में दर्शाया।³

खुसरो की शिक्षा-दीक्षा फारसी और अरबी में हुई, लेकिन उनका झुकाव स्थानीय भाषाओं और भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं की ओर भी था। वे हजरत निजामुद्दीन औलिया के प्रिय शिष्य थे, जिनके सूफी विचारधारा का प्रभाव उनकी रचनाओं और जीवन पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उनकी धार्मिक और आध्यात्मिक समझ ने उनकी कविताओं और संगीत में गहराई और अर्थवत्ता जोड़ी। उनके कार्यों ने भारतीय साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की और उर्दू भाषा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।⁴

साहित्यिक योगदान

कविता और शायरी

अमीर खुसरो ने फारसी, हिंदी, और प्रारंभिक उर्दू में कविताएँ लिखीं। उनकी कविताओं का विषय प्रेम, आध्यात्मिकता, और सूफीवाद था। खुसरो की गज़लें और रुबाईयाँ उनकी विशिष्ट शैली का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिसमें उनकी भाषा की सरलता और गहराई दोनों का समन्वय देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, उनकी एक प्रसिद्ध रुबाई है:

"खुसरो दरिया प्रेम का, उलटी वा की धार।

जो उतरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार।।"

यह दो पंक्तियाँ उनके सूफी दर्शन और प्रेम की गहराई का सार प्रस्तुत करती हैं। अमीर खुसरो की कविताओं में भारतीय और फारसी संस्कृति का अद्भुत मिश्रण देखने को मिलता है। उन्होंने फारसी ग़ज़ल शैली को हिंदी और उर्दू साहित्य में लोकप्रिय बनाया।

ग्रंथ और काव्य संग्रह

अमीर खुसरो, 13वीं सदी के सूफी कवि, विद्वान और संगीतकार थे, अमीर खुसरो, 13वीं सदी के सूफी कवि, विद्वान और संगीतकार थे, जिन्हें उनके काव्यात्मक शैली और भाषाई प्रतिभा के लिए जाना जाता है। यहाँ उनकी कुछ प्रमुख रचनाएँ और पुस्तकें दी गई हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं:

1. खज़ाइन-उल-फुतूह: आमिर खुसरो की इस पुस्तक का अर्थ है "विजयों का खजाना"। इस पुस्तक में उन्होंने अलाउद्दीन खिलजी के सैन्य अभियानों और उसकी विजयों का विस्तृत वर्णन किया है। यह पुस्तक उस समय की राजनीति और सैन्य ताकतों का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत है। खुसरो ने अपने काव्यात्मक शैली में खिलजी के विजयों का वर्णन किया है, जिससे यह ग्रंथ एक ऐतिहासिक दस्तावेज होने के साथ-साथ साहित्यिक कृति भी बन गया है।⁵ इस ग्रंथ में उन्होंने अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल के सैन्य विजय और राजनीतिक घटनाओं का वर्णन किया है।

2. तारीख-ए-अलाई: यह पुस्तक भी अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल पर आधारित है और उसमें उसके दरबार की घटनाओं और शासनकाल के प्रमुख प्रशासनिक सुधारों का उल्लेख किया गया है। यह किताब दिल्ली सल्तनत के इतिहास को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत है, जिसमें खिलजी के सैन्य अभियानों और उसकी प्रशासनिक व्यवस्था का विस्तार से वर्णन किया गया है।

तारीख-ए-अलाई: यह एक ऐतिहासिक ग्रंथ है, जिसमें अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल की घटनाओं का विस्तार से वर्णन है। तारीख-ए-अलाई" में उन्होंने खिलजी के दरबार की गतिविधियों और उनके शासनकाल के दौरान होने वाली सामाजिक और सांस्कृतिक घटनाओं को भी दर्ज किया।⁶

3. अशिका: यह आमिर खुसरो की एक प्रेम कविता है, जो देवल रानी और खिज़्र खान की प्रेम कहानी पर आधारित है। इस काव्य में खुसरो ने प्रेम के भावनात्मक पहलुओं को व्यक्त किया है, और इसे फारसी साहित्य की प्रमुख प्रेम कथाओं में से एक माना जाता है।⁷ अशिका केवल एक प्रेमकथा नहीं है, बल्कि इसमें राजनीतिक और सांस्कृतिक संदर्भ भी जुड़ा हुआ है, जो इसे विशेष बनाता है।

4. दीवान-ए-खुसरो: यह आमिर खुसरो के कविताओं का संग्रह है, जिसमें ग़ज़ल, रुबाई, कसीदा और मस्नवी जैसी विभिन्न काव्य विधाएँ शामिल हैं।⁸ इस संग्रह में खुसरो की काव्यात्मक प्रतिभा का व्यापक प्रदर्शन होता है। फारसी कविता परंपरा को भारतीय संदर्भ में प्रस्तुत करने के उनके प्रयास को इस संग्रह में देखा जा सकता है। उनकी कविता में प्रेम, रहस्यवाद और मानवता का गहरा संदेश मिलता है।

5. नूह-सिपिहर: इस पुस्तक में खुसरो ने कुतुबुद्दीन मुबारक शाह के शासनकाल का वर्णन किया है। इस ग्रंथ को नौ अध्यायों में विभाजित किया गया है, और यह उस समय की राजनीतिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक घटनाओं का बारीकी से अध्ययन करने का अवसर प्रदान करता है।⁹ इसके माध्यम से मुबारक शाह के दरबार और उसकी गतिविधियों का विस्तार से पता चलता है, जिससे हमें उस समय की सांस्कृतिक स्थिति की गहरी जानकारी मिलती है।

6. मिफ़ताह-उल-फ़तूह: यह पुस्तक जलालुद्दीन फिरोज खिलजी की विजयों पर आधारित है और उसमें खिलजी के युद्ध अभियानों का वर्णन किया गया है। खुसरो ने इसमें काव्यात्मक शैली में युद्ध की घटनाओं और खिलजी की जीत का वर्णन किया है।¹⁰ इस पुस्तक के माध्यम से हमें खिलजी के शासनकाल के सैन्य अभियानों और उस समय की राजनीति की गहरी जानकारी मिलती है। यह पुस्तक उस युग की राजनीतिक संरचना को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत है।

7. तुफ़हत-उस-सिगार – "तुफ़हत-ए-सिगार" या "युवा अवस्था का तोहफा", उनका पहला दीवान (कविता संग्रह)।

8. वसत-उल-हयात – "जीवन का मध्य", उनकी कविताओं का एक अन्य संग्रह।

9. घुर्रत-उल-कमाल – "पूर्णता का शिखर", जिसमें उनकी परिपक्व रचनाएँ हैं।

10 . बहर-उल-अस्मार – नैतिक शिक्षाओं के किस्सों पर आधारित एक शिक्षाप्रद रचना।

11. किरान-उस-सादैन – "दो शुभ सितारों का संयोग", जिसमें सुल्तान कैकुबाद और उनके पिता बुघरा खान के मिलन का जिक्र है।

12. खम्सा-ए-खुसरो – निजामी के खम्सा से प्रेरित, इसमें पाँच मसनवी शामिल हैं:

मतला-उल-अनवार – "रोशनी का उदय स्थान"

शिरिन-ओ-खुसरो – एक प्रेम काव्य

मजनूँ-ओ-लैला – प्रसिद्ध प्रेमियों की कहानी

आइना-ए-सिकंदरी – सिकंदर महान पर आधारित

हशत बिहिशत – "आठ स्वर्ग", जो सूफीवाद से प्रेरित कहानी संग्रह है

13. इजाज़-ए-खुसरवी – गद्य और कविता का संग्रह, जिसमें उनकी बुद्धिमत्ता और वाक्पटुता प्रदर्शित होती है।

इन रचनाओं के माध्यम से अमीर खुसरो ने भारतीय उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक धरोहर, फारसी साहित्य और भारतीय शास्त्रीय संगीत में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इन रचनाओं के माध्यम से अमीर खुसरो ने न केवल साहित्यिक योगदान दिया, बल्कि उस समय के सामाजिक और राजनीतिक परिवेश को भी समझने में मदद की। आमिर खुसरो की पुस्तकों का साहित्यिक मूल्य: आमिर खुसरो की पुस्तकों का साहित्यिक मूल्य अनमोल है। उनकी लेखनी में सूफी विचारधारा, प्रेम, और रहस्यवाद के तत्व स्पष्ट रूप से दिखते हैं। वे फारसी काव्य परंपरा के अद्वितीय प्रवर्तक थे, जिन्होंने भारतीय संस्कृति को फारसी साहित्यिक शैली से समृद्ध किया।¹¹ उनकी रचनाओं में भाषा और शैली की उत्कृष्टता के साथ-साथ उनके समय के समाज और राजनीति का भी गहरा चित्रण मिलता है। खुसरो की रचनाएँ भारतीय साहित्य के विकास में मील का पत्थर साबित हुईं और उर्दू और हिंदी साहित्य के प्रारंभिक चरणों में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

इतिहास में खुसरो की पुस्तकों का महत्व: खुसरो की रचनाएँ उस समय के समाज और राजनीति का जीवंत चित्रण प्रस्तुत करती हैं। उनकी पुस्तकें दिल्ली सल्तनत के इतिहास को समझने के लिए महत्वपूर्ण स्रोत मानी जाती हैं। उनकी ऐतिहासिक दृष्टि से लिखी गई पुस्तकें न केवल उस समय की घटनाओं का विवरण देती हैं, बल्कि उस समय के शासकों, दरबारियों और जनमानस की मानसिकता को भी उजागर करती हैं।¹²

भाषा का विकास

अमीर खुसरो का योगदान सिर्फ फारसी तक सीमित नहीं था। उन्होंने हिंदी और उर्दू जैसी स्थानीय भाषाओं में भी रचनाएँ लिखीं। खुसरो की रचनाओं ने हिंदी और उर्दू के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे स्थानीय बोलचाल की भाषा को फारसी साहित्यिक मानकों के साथ मिलाकर एक नई शैली की रचना करते थे। उनके द्वारा लिखा गया दोहा:

"सजनों से लागी रे लगन, सजनों से।

गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केस रे।।"

यह खुसरो की हिंदी में लिखी रचनाओं का एक प्रसिद्ध उदाहरण है, जो आमजन की भाषा में लिखी गई थी। इतिहासकारों के लिए आमीर खुसरो का साहित्य उस समय की राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों को समझने का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। उनके ग्रंथों ने दिल्ली सल्तनत के शासनकाल की कई महत्वपूर्ण घटनाओं और परिवर्तनों को दर्ज किया, जो भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण हैं।¹³

संगीत में योगदान

अमीर खुसरो न केवल एक महान कवि थे, बल्कि वे भारतीय शास्त्रीय संगीत के भी महान ज्ञाता थे। उन्हें 'संगीत सम्राट' के नाम से भी जाना जाता है। उनका सबसे बड़ा संगीत योगदान तबला और सितार के आविष्कार के रूप में माना जाता है। उन्होंने तबले को भारतीय संगीत में ताल और लयबद्धता के नए आयाम दिए। इसके अलावा, खुसरो ने क़व्वाली, एक सूफी संगीत शैली की भी शुरुआत की, जो आज भी सूफी संप्रदाय में अत्यधिक सम्मानित है। खुसरो ने फारसी और भारतीय संगीत के तत्वों को मिलाकर एक नई संगीत शैली का विकास किया।¹⁴

अमीर खुसरो ने 'तराना' और 'खयाल' जैसी संगीत शैलियों को भी विकसित किया, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत के महत्वपूर्ण भाग बने। उनकी संगीत शैली में भारतीय और फारसी संगीत का अद्भुत समन्वय देखा जा सकता है। खुसरो के गीत और धुनें आज भी संगीत समारोहों में गाई जाती हैं। वह "क़व्वाली" संगीत के संस्थापक माने जाते हैं, जो आज सूफी संगीत का एक प्रमुख रूप है। इसके अलावा, खुसरो ने तबले का आविष्कार किया, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक प्रमुख वाद्य यंत्र है।¹⁵ खुसरो भारतीय संगीत के इतिहास में एक प्रमुख व्यक्ति माने जाते हैं। उन्होंने भारतीय संगीत को फारसी संगीत के साथ मिलाकर एक नई धारा का निर्माण किया।¹⁶

भारतीय संस्कृति पर प्रभाव

अमीर खुसरो का प्रभाव भारतीय संस्कृति के कई पहलुओं पर देखा जा सकता है। उन्होंने साहित्य, संगीत, और भाषा के क्षेत्र में जो योगदान दिया, उसका असर आज भी भारतीय समाज पर देखा जा सकता है। वे भारत में सांस्कृतिक समन्वय के प्रतीक माने जाते हैं, जिन्होंने विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों, और परंपराओं को मिलाकर एक अनूठी सांस्कृतिक धरोहर का निर्माण किया। खुसरो की रचनाओं ने हिंदू और मुस्लिम संस्कृतियों के बीच एक सेतु का कार्य किया और उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय को बढ़ावा दिया।¹⁷ खुसरो की रचनाएँ और उनके द्वारा स्थापित संगीत शैलियाँ आज भी भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हैं। उनकी कविताओं में जो समर्पण और आध्यात्मिकता थी, उसने भारतीय साहित्य और संगीत को गहराई से प्रभावित किया। खुसरो द्वारा रचित 99 पुस्तके इस बात का प्रमाण है कि भले ही वे विभिन्न राजदरबारों में देश-विदेश में रहे हो, लेकिन साहित्य साधना उनके प्रमुख लक्ष्य रहा अमीर राजी ने उनके द्वारा रचित कृतियों की संख्या 99 बढ़कर 199 बताई हैं तथा खुसरो के समकालीन इतिहासकार बरनी ने अपने ग्रंथ "तारीख के फिरोजशाही" में लिखा है कि उनकी इतनी रचनाएँ हैं, कि संग्रह से एक पुस्तकालय बनाया जा सकता है। खुसरो का सूफीवाद से गहरा नाता था और वे हजरत निजामुद्दीन औलिया के प्रिय शिष्य थे। उन्होंने सूफी विचारधारा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।¹⁸ इतिहास में योगदान: आमीर खुसरो का इतिहास में योगदान कई रूपों में महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपने

समय की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं को अपने साहित्य में दर्ज किया, जो आज के इतिहासकारों के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत है।¹⁹

निष्कर्ष

अमीर खुसरो का साहित्यिक और सांस्कृतिक योगदान अद्वितीय है। वे एक ऐसे कवि और संगीतकार थे, जिन्होंने भारत की बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक विरासत को समृद्ध किया। उनकी रचनाएँ आज भी साहित्य और संगीत में प्रासंगिक हैं और भारतीय समाज और संस्कृति को एक गहरे स्तर पर प्रभावित करती हैं। खुसरो की कविताएँ और संगीत न केवल भारतीय उपमहाद्वीप में, बल्कि विश्व स्तर पर भी सम्मानित हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आसी, रऊफ आमिर खुसरो और भारतीय संस्कृति. दिल्ली: साहित्य भवन, 1989, पृ. 14.
2. शर्मा, के.सी. आमिर खुसरो: कवि और विद्वान. लखनऊ: प्रकाशन विभाग, 1994, पृ. 61.
3. आसी, रऊफ. आमिर खुसरो और भारतीय संस्कृति. दिल्ली: साहित्य भवन, 1989, पृ. 18.
4. ताहिर, मुहम्मद. भारतीय साहित्य में सूफी प्रभाव. अलीगढ़: मुसलिम यूनिवर्सिटी प्रेस, 2000, पृ. 88.
5. हसन, सईद. खिलजी काल और आमिर खुसरो का योगदान. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1993, पृ. 58.
7. चौहान, अरविंद. "प्रेम साहित्य और आमिर खुसरो की भूमिका." भारतीय साहित्य जर्नल, 2018, पृ. 92.
8. सिंह, शैलेंद्र. फारसी साहित्य और उसका भारतीय संदर्भ. अलीगढ़: प्रकाशन विभाग, 2004, पृ. 69.
9. खान, जफरुल. आमिर खुसरो का साहित्यिक योगदान. दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2011, पृ. 123.
10. ताहिर, मुहम्मद. सैन्य साहित्य और आमिर खुसरो की दृष्टि में. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2008, पृ. 88.
11. हसन, सईद. सूफी साहित्य में आमिर खुसरो का स्थान. अलीगढ़: मुसलिम यूनिवर्सिटी प्रेस, 2006, पृ. 39.
12. खान, जफरुल. दिल्ली सल्तनत का इतिहास: आमिर खुसरो की दृष्टि में. दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2012, पृ. 135.
13. खान, जफरुल. दिल्ली सल्तनत का इतिहास: आमिर खुसरो की दृष्टि में. दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2012, पृ. 135.
14. चौहान, अरविंद. "खुसरो और भारतीय संगीत का विकास." संगीत अनुसंधान पत्रिका, 2016, पृ. 120.
15. सिंह, शैलेंद्र. "तबले का इतिहास और खुसरो का योगदान." भारतीय शास्त्रीय संगीत जर्नल, 2017, पृ. 92.
16. चौहान, अरविंद. "भारतीय संगीत और आमिर खुसरो का प्रभाव." संगीत शोध पत्रिका, 2018, पृ. 56.
17. खान, जफरुल. सांस्कृतिक समन्वय और आमिर खुसरो. अलीगढ़: मुसलिम यूनिवर्सिटी प्रेस, 2005, पृ. 92.
18. खान, जफरुल. दिल्ली सल्तनत का इतिहास: आमिर खुसरो की दृष्टि में. दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2012, पृ. 135.
19. खान, जफरुल. दिल्ली सल्तनत का इतिहास: आमिर खुसरो की दृष्टि में. दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2012, पृ. 135.